कक्षा-10

मिथिला-विभूति

ABSOL SOLUTIONS PATNA

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in

or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

मिथिला-विभूति

दशम कक्षाक मैथिली भाषाक पूरक पाठ्य-पुस्तक

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2010-11

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

मूल्य : रु० 7.50

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा जे० एम० डी० प्रेस, मुसल्लहपुर हाट, पटना - 800 006 द्वारा 10,000 प्रतियाँ मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार अप्रील, 2009 सँ प्रथम चरणमे राज्यक कक्षा-IX हेतु नवीन पाठ्यक्रमकेँ लागू कएल गेल अछि। एही क्रममे शैक्षिक सत्र 2010 कऽ लेल वर्ग-I, III, VI एवं X कऽ सभ भाषायी आओर गैर भाषायी पुस्तकक पाठ्यक्रम लागू करल जा रहल अछि। सहि नव पाठ्यक्रमक आलोकमे एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X कऽ गणित एवं विज्ञान तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI तथा X कऽ सभ पुस्तक बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कऽ मुद्रित कएल जा रहल अछि।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षाक गुणवत्तापूर्ण शिक्षाक लेल माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार; मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभागक प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंहक मार्ग निर्देशनक प्रति हम हृदयसँ कृतज्ञ छी।

एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली तथा एस० सी० ई० आर० टी०, बिहारक पटनाक निदेशकक हम आभारी छी, जे अपन सहयोग प्रदान कएल।

श्री बंसत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेडक सफल प्रयास एवं सहयोगक आभारी छी, जे दल-भावनाक अनुरूप कार्यकेँ संपादन कएलन्हि।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविदक टिप्पणी एवं सुझावक स्वागत करत जाहिसँ बिहार राज्यक देशक शिक्षा जगतमे उच्चतम स्थान दिआबमे हमर प्रयास सहायक सिद्ध भऽ सकय।

आशुतोष, भा० व० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

दिशा-बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक (प्रभारी) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार।

श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना।

डॉ0 कासिम खुर्शीद, प्रभारी विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना।

पाठ्य-पुस्तक विकास समिति सदस्य, मैथिली भाषा समूह

डॉ0 इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

प्रो0 प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, पूर्व प्राचार्य, आर० पी० एस० कॉलेज, महनार (वैशाली)।

श्री मोहन भारद्वाज, साहित्यकार।

डॉ0 नरेश मोहन झा, व्याख्याता, आर० के० कॉलेज, मधुबनी।

डॉ0 कमलाकान्त भण्डारी, व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, शास्त्रीनगर, पटना - 23।

डॉ0 अरूण कुमार झा, व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, पटना सिटी, पटना - 7।

कार्यक्रम समन्वयक

1. **डॉ0 सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना - 800 006
2. **श्री इम्तियाज आलम,** व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना - 800 006

समीक्षक

1. **डॉ0 मुनेश्वर झा,** पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
2. **डॉ0 भगवान जी चौधरी,** वाचक, मैथिली विभाग, साहेबगंज कॉलेज, साहेबगंज

ABSOLUTE SOLUTIONS PATNA

मिथिला-विभूति

विभूति शब्दक अर्थ अछि सम्पत्ति, वैभव, गौरव। ओना तँ ई शब्दक आनो अर्थ अछि, मुदा एहिठाम एही अर्थमे एकर प्रयोग भेल अछि। तेँ मिथिला-विभूति माने मिथिलाक गौरव, मिथिलाक ऐश्वर्य। मिथिलामे एहन लोकक कमी नहि अछि जे एहि जनपदकेँ गौरवशाली बनौलनि अछि। विश्व भरिमे एकरा प्रतिष्ठित कयलनि अछि।

मिथिलाक इतिहास जनक आ याज्ञवल्क्यक समयसँ उपलब्ध अछि। जनक वंशक राज मिथिलामे बहुत दिन धरि रहल। याज्ञवल्क्य ओही कालक मनीषी विद्वान रहथि। याज्ञवल्क्यसँ मंडन मिश्र धरि, आ तकरा बादो, एहन कतेक दार्शनिक, साहित्यकार, चित्रकार ओ गीतकार भेलाह अछि जे विश्वविख्यात छथि। प्रस्तुत पोथी तकर एकटा झाँकी मात्र थिक। एहिमे जाहि छए गोटेक संक्षिप्त परिचय देल गेल अछि से मिथिलाक विभूतिमालाक उदाहरण रूपमे छथि। प्राचीन कालसँ आइ धरिक एहि आदर्श व्यक्तित्व सभकेँ जानि कऽ किशोर-वय छात्रलोकनि प्रेरित आ प्रोत्साहित हेताह। जनक सन राजा आ विद्वान, याज्ञवल्क्य सदृश चिन्तक, विद्यापति आ चन्दा झा जकाँ गुणी साहित्यकारक जीवन एवं लेखन पथ-प्रदर्शक बनतनि। लक्ष्मण झा आजुक समयक आदर्श पुरुष छथि। एतबे नहि, माँगन खबास गवैयाक रूपमे तँ गोदावरी दत्त मिथिला चित्रकलाक क्षेत्रमे विख्यात छथि।

प्रतिभाक विकासक क्षेत्र असीम अछि। जाहि दिशामे रुचि हो ताहीमे मन लगा कऽ, धैर्य आ बुद्धि-विवेक संग काज कऽ, आदर्श स्थापित कयल जा सकैत अछि। विश्वास अछि, छात्रलोकनिकेँ एहि पोथीक अध्ययनसँ मात्र दिशा-निर्धारणे मे नहि, अपितु, यशस्वी बनबाक संकल्प भेटतनि।

भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
महेन्द्रू, पटना

रचना-क्रम

जनक आ याज्ञवल्क्य	1 – 6
विद्यापति	7 – 10
चन्दा झा	11 – 13
सुभद्र झा	14 – 21
लक्ष्मण झा	22 – 27
माँगन खवास	28 – 31
गोदावरी दत्त	32 – 34

जनक आ याज्ञवल्क्य

जनक

मिथिलामे अति प्राचीनकालसँ लऽ महाभारत काल धरि जाहि वंशक शासन छलैक से जनक राजवंश कहबैत छल। एहि वंशक राजालोकनि अपन उपाधि जनकक व्यवहार करैत छलाह। निमि जनक एहि राजवंशक संस्थापक छलाह। ई ब्रह्माक पाँच पीढ़ी नीचा छलाह। ब्रह्माक पुत्र मरीचि, मरीचिक पुत्र कश्यप, कश्यपक पुत्र विश्वनाथ, विश्वनाथक पुत्र वैवस्वत आ वैवस्वतक पुत्र छलथिन इक्ष्वाकु। इक्ष्वाकुक तीन गोट प्रख्यात संतानमे निमि जनक सेहो छलाह।

राज्यक स्थापनाक बाद निमि एक गोट यज्ञ करऽ चाहैत छलाह। यज्ञ एक हजार वर्ष धरि चलितैक। ओ यज्ञक हेतु पुरोहितक रूपमे वशिष्ठक वरण करऽ चाहैत छलाह। मुदा ओहि समय वशिष्ठ इन्द्रक ठानल यज्ञमे पुरोहितक काज पर छलाह। निमिक निवेदन पर वशिष्ठ अपन व्यस्तताक स्थिति देखा देलथिन आ कहलथिन जे ओ इन्द्रक यज्ञ-समाप्तिक बादे हुनक यज्ञ करा सकैत छथिन। निमिकेँ ओतेक कालावधि धरि यज्ञ रोकने रहबाक धैर्य नहि रहलनि। ओ गौतमकेँ अपन पुरोहित बना यज्ञ ठानि देलनि। एमहर जखन इन्द्रक यज्ञ समाप्त भेलनि तँ वशिष्ठ निमिक यज्ञ आरम्भ करयबाक हेतु हुनका ओहिठाम गेलाह। ओहिठाम पूर्वहिसँ यज्ञ होइत देखि हुनका बेस क्रोध भेलनि। ओ निमि के शाप दऽ देलथिन–'अहाँ बिनु देहक भऽ जाउ।' शापक फलस्वरूप निमि लगले मृत्युकेँ प्राप्त कऽ गेलाह। हुनक आकस्मिक मृत्युसँ राज्यमे अराजकता पसरबाक भय छलैक, तेँ यज्ञ पुरोहित ओ अन्य ऋषि लोकनि निमिक मृत शरीरकेँ ताधरिक हेतु तेल आ इत्रमे राखि देलथिन यावत् यज्ञान्त नहि भऽ गेल। ततः पर ऋषिलोकनि निमिक मृत देहकेँ मथि कऽ एकटा बालक उत्पन्न कयलनि। एहि बालकक नाम मिथि राखल गेलनि आ हिनके नाम पर जनक राजवंश द्वारा शासित प्रदेशकेँ मिथिला कहल गेलैक। ताहिसँ पूर्व एहि प्रदेशकेँ विदेह जनपद

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कहल जाइत छलैक आ एकर राजालोकनि वैदेह कहबैत छलाह। वैदेह राजालोकनि सूर्यवंशी छलाह आ भारतीय इतिहासक प्रारम्भिक युगमे ई लोकनि आर्य सभ्यताक अग्रदूतक रूपमे अवतरित भेल छलाह।

पौराणिक साहित्य ओ वाल्मीकि रामायणक आधार पर निमिसँ लऽ कृति विदेह धरि जनक राजवंशक तिरपन गोट राजाक उल्लेख भेटैत अछि। एहिमे किछु राजा अत्यन्त प्रसिद्ध भेलाह।

राजा मिथि वीर योद्धा छलाह। ई हिमालयक तराइ क्षेत्रमे बसल पहाड़ी जनजातिकेँ युद्धमे पराजित कऽ ओकरा सभक उपद्रवकेँ शान्त कयलनि आ हिमालय पहाड़ लग एक नदीक किनारमे अपन राजधानी बनौलनि। जनक राजवंशक ई राजधानी जनकपुर कहौलक। संभवतः हिमालयक पवित्रता ओ ऋषि लोकनिक सान्निध्यक सुलभताक कारणेँ जनकपुरकेँ राजधानीक रूपमे विकसित कयल गेल छल। राजा मिथि भार्गव ऋषिसँ ज्ञानार्जन कयने छलाह।

जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह रामायण कालीन सीरध्वज जनक। सीता हिनके पुत्री छलथिन जनिक विवाह अयोध्याक राजा दशरथक पुत्र श्रीरामक संग भेल छलनि। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ओ जनकसुता सीताक कथा आइयो भारतीय संस्कृतिक अभिन्न अंग बनल अछि।

जनक राजलोकनि भारतेक इतिहासमे नहि, सम्पूर्ण विश्वक इतिहासमे जाज्वल्यमान ज्योतिपु ज जकाँ चमकैत अछि। हुनकालोकनिक समयमे राजतंत्रक जे आदर्श रूप उपस्थित भेल तकर उदाहरण कतहु दोसर ठाम भेटब दुर्लभ अछि। हिनकालोकनि सब विद्वान, आध्यात्मवादी, ब्रह्मज्ञानी ओ संसारक बन्धनसँ मुक्त विभूतिकेँ पाबि मिथिलेक भूमिटा नहि, सम्पूर्ण आर्यावर्त्त गौरवान्वित अछि। हिनकेलोकनिक देल मार्ग पर चलैत मिथिला अदौसँ भारतीय ज्ञान-विज्ञान, दर्शन ओ सांस्कृतिक गतिविधिक केन्द्रक रूपमे अपन सत्ता प्रतिष्ठापित कयने अछि।

याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक प्राचीनतम राजनीतिक चिन्तक, दार्शनिक ओ विधिकर्त्ता भऽ गेल छथि। ई मिथिलाक प्रसिद्ध दार्शनिक राजा कृति जनकक समयमे भेल छलाह। याज्ञवल्क्य संहिताक घोषणा अछि–'मिथिलास्थः स योगीन्द्रः क्षणं ध्यात्वाऽब्रवीन्मुनीन्' अर्थात् योगी याज्ञवल्क्य मिथिलामे रहैत छलाह आ क्षण मात्रमे ध्यान लगौला उत्तर मुनि भऽ गेलाह।

याज्ञवल्क्यक पिताक नाम देवरात छलनि। हुनक माय महान ऋषि वैशम्पायनक बहिन छलथिन। हुनक पिता अन्नदान करबामे प्रसिद्ध भेलाह। तेँ हुनक एक गोट नाम वाजसनि सेहो छलनि। पिताक नामाधार पर याज्ञवल्क्यकेँ वाजसनेय सेहो कहल जाइत छनि।

याज्ञवल्क्य व्यासदेवक चारि गोट शिष्यसँ चारू वेदक अध्ययन कयने छलाह। अपन माम वैशम्पायनसँ ओ यजुर्वेदक शिक्षा प्राप्त कयने छलाह तथा उद्दालक आरूणि नामक तत्कालीन प्रौढ़ दार्शनिकसँ वेदान्तदर्शन पढ़ने छलाह। हिरण्यनाम नामक ऋषि हिनका योगशास्त्रक शिक्षा प्रदान कयने छलथिन। एहि तरहेँ याज्ञवल्क्य वेद, वेदान्त, दर्शन ओ योगविद्यामे पारंगत विद्वान भेलाह।

याज्ञवल्क्य जखन अपन माम वैशम्पायनसँ शिक्षा ग्रहण कऽ रहल छलाह, तखन अपन गुरूक सेवामे पूर्ण तत्पर रहैत छलाह। एकदिन गुरूपत्नी आ मामि हुनका तुलसीक अनबाक हेतु कहलथिन गाछ/त'। ओ तुलसी वृक्षकेँ तकैत सघन जंगल धरि गेलाह जतय हुनका एकटा नरभक्षी बाघसँ पाला पड़ि गेलनि। मुदा ओ कनेको विचलित नहि भेलाह आ तुलसी पादप लइये कऽ घुरलाह। बाघ हुनक बाट छोड़ि अन्य दिशामे पड़ा गेल।

अपार गुरूभक्तिक अछैतो एक दिन हुनक गुरू कोनो बात पर क्रुद्ध भऽ उठलथिन आ हुनका अपन देल विद्या घुरा देबाक आज्ञा देलथिन। याज्ञवल्क्य लगले गुरूक देल विद्याकेँ बोकरि देलनि। हुनक बोकारकेँ त्तित्तिर सभ चाटि गेल आ सैह तैत्तिरीय संहिताक रूपमे वर्त्तमान अछि। याज्ञवल्क्य अपन योगबलसँ

सूर्यक आवाहन कयलनि। सूर्य हुनका यजुर्वेदक शिक्षा देलथिन। यजुर्वेदक ई नवीन शाखा शुक्ल यजुर्वेद वा वाजसनेयि संहिताक रूपमे वर्त्तमान अछि।

याज्ञवल्क्यकेँ कात्यायनी एवं मैत्रेयी नामक दुइ गोट पत्नी छलथिन। ई एक गोट सद्‌गृहस्थ ओ सदुपाध्यायक जीवन वितबैत रहलाह। हिनक आश्रममे निरन्तर वेदध्वनि ओ स्वाहा शब्द गु जायमान रहैत छल। अध्ययन ओ अध्यापनक निरन्तरतासँ हिनक आश्रम सुशोभायमान रहैत छल। विद्याध्ययन समाप्त कऽ प्रस्थान कयनिहार स्नातकलोकनि हिनक आश्रमसँ निरन्तर जुड़ल रहैत छलाह।

कात्यायनी आदर्श गृहिणी छलीह। ई अपन पतिपरायणता, धार्मिकता ओ विलक्षण बुद्धिक हेतु प्रसिद्ध भेलीह। ई अपन घरक भीत, ओसारा एवं भूमिकेँ नीपि-ढौरि कऽ सजौने रहैत छलीह। चित्रकला, अरिपन ओ पाकशास्त्रमे ई निष्णात छलीह। पति, अन्य सम्बन्धी ओ अतिथिलोकनिक सेवा-परिचर्यामे लागलि ई मिथिलाक आदर्श गृहिणीक प्रतीकस्वरूपा छलीह।

याज्ञवल्क्यक दोसर पत्नी मैत्रेयी विदुषी ओ दार्शनिक प्रवृत्तिक छलीह। ओ सांसारिक दायित्वसँ मुक्त रहि निरन्तर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करबाक हेतु प्रयत्न करैत रहैत छलीह। एहि हेतु ओ अधिक काल पतिसँ ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पुछैत रहैत छलथिन। ध्यान, साधना ओ तप हिनक जीवनक अंग बनल रहलनि।

याज्ञवल्क्य अपन विद्याक बलेँ प्रचुर धनार्जन कयलनि आ ओहि सम्पत्तिसँ दीन-दुःखीक बीच दानो खूब कयलनि। हिनक साधु स्वभाव, सरलता, संवेदनशीलता ओ दानशीलताक अनेक कथा लोकमे प्रचलित अछि। एक बेर जखन हिमालय तराइ क्षेत्रमे अकाल पड़ि गेलैक तँ ई अपन पत्नीक समस्त स्वर्णाभूषण बेचि लोकसेवामे लगा देलनि।

याज्ञवल्क्य जाहि विदेहराज जनकक समकालीन छलाह, हुनक सभामे समय-समय पर जाइत-अबैत रहैत छलाह। जनकराज स्वयं ब्रह्मज्ञानक जिज्ञासु रहथि। याज्ञवल्क्यसँ भेट भेलापर ओलोकनि ब्रह्म, आत्मा, जगत, मृत्यु, पुनर्जन्म, मुक्ति आदि विविध विषय पर परस्पर वार्त्तालाप कयल करथि। याज्ञवल्क्यक

ब्रह्मज्ञानसँ जनक संतुष्ट भऽ हुनका अपन कुल गुरू आ पुरोहित बना लेने छलथिन। एक बेर अपन कुलगुरूकेँ आर्यावर्तक श्रेष्ठ ज्ञानी प्रमाणित करबाक उद्देश्यसँ जनक एक गोट बहुदक्षिणा यज्ञ कयलनि। एहि यज्ञमे कुरू, पांचाल आदि देशक विद्वान शास्त्रार्थक हेतु एकत्र भेलाह। जे विद्वान सर्वश्रेष्ठ घोषित होइतथि हुनका जनक स्वर्णमंडित सींघवला एक हजार गाय दान करबाक हेतु प्रस्तुत छलाह। शास्त्रार्थ प्रारम्भ होयबासँ पहिनहि याज्ञवल्क्य अपन शिष्य लोकनिकेँ सभटा गायकेँ हाँकि कऽ अपन आश्रम लऽ जयबाक आदेश देलथिन। शिष्यलोकनि गाय सभकेँ लऽ चलि देलनि। मुदा देश-देशसँ आयल ब्रह्मवेत्ता विद्वानमंडलीकेँ हुनक ई काज असंगत बुझना गेलनि। शास्त्रार्थ प्रारम्भ भेल। एहि शास्त्रार्थमे जरतकवि अतिभाग, उसस्त चक्रायण, कहील कोशिकतेय, गार्गी वाचकन्वी, उद्दालक आरूणि, विदग्ध, शाकल्य आदि अनेक ब्रह्मवेत्ता ऋषि ओ गार्गी सदृश विदुषी याज्ञवल्क्य पर प्रश्न वर्षा करैत रहलीह। याज्ञवुल्क्य अपन उत्तरसँ सभकेँ सन्तुष्ट कऽ सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मवेत्ता घोषित भेलाह। ई कथा वृहदारण्यकोपनिषद्मे अनुस्यूत अछि। एहि उपनिषद्मे जनक ओ याज्ञवल्क्य बीच अनेक बेर दार्शनिक वार्त्तालाप होयबाक दृष्टान्त सेहो भेटैत अछि। ई दुनू राजर्षि ओ महर्षि जखन परस्पर वार्त्तालाप पर बैसैत छलाह तखन याज्ञवल्क्य जनककेँ राजाक सम्मान दैत छलथिन आ जनक याज्ञवल्क्यकेँ महर्षिक। शुक्ल यजुर्वेद आ शतपथ ब्राह्मण याज्ञवल्क्यक कालजयी कृति अछि।

– डॉ0 इन्द्रकान्त झा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) जनक राजवंशक संस्थापक छलाह

(क) निमि जनक (ख) मरीचि

(ग) कश्यप (घ) विश्वनाथ

(ii) जनक राजवंशक राजधानी कहौलक

(क) काठमांडू (ख) जनकपुर

(ग) सिरहा (घ) दरभंगा

(iii) जनक राजवंशक सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा भेलाह

(क) सीरध्वज जनक (ख) मिथि

(ग) इक्ष्वाकु (घ) तीनूमे सँ क्यो नहि ।

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) जनक राजवंश पर एकटा संक्षिप्त निबन्ध लिखू ।

(ii) जनक राजवंशक प्रमुख राजा सभक परिचय दिअ ।

(iii) मिथिलाक नामकरण कोना भेल ?

(iv) राजा मिथि कोना राज्यक स्थापना कयलनि ?

(v) याज्ञवल्क्यक परिचय दिअ ।

विद्यापति

विद्यापति मैथिलीक कवि पति अधिक जनप्रिय छथि। मैथिली मिथिलांचलक भाषा अछि। एहि भाषाक सभसँ पैघा कवि छथि विद्यापति। मैथिलीमे ओ केवल गीत लिखलनि। गीत काव्य-रचनाक एकटा विधा अछि। विद्यापतिक गीत देशेमे नहि, विदेशोमे लोक पढ़लक। सौंसे संसारमे विद्यापति आ हुनक गीतक माध्यमसँ लोक मिथिला आ ओकर भाषा तथा साहित्यकेँ जनलक। दुनिया भरिक साहित्यिक मानचित्रमे मैथिली-साहित्यक स्थान सुरक्षित भऽ गेल।

विद्यापतिक जन्म मधुबनी जिलाक बिस्फी गाममे 1350 इसवीमे भेल छलनि। हुनक मृत्यु 1440 इसवीक भेलनि। विद्वानलोकनिमे विद्यापतिक जन्म आ मृत्यु कोन वर्ष भेलनि ताहि सम्बन्धमे मतभेद अछि, मुदा उक्त तिथिक प्रसंग अनेक विचारक सहमत छथि। एतेक धरि तऽ निश्चित अछिये जे विद्यापति लगभग सात सय वर्ष पहिने भेल छलाह। ओहि समयमे मिथिलामे राजतंत्र छल। राजाक आदेश चलैत छल। विद्यापति राज-पण्डित रहथि। मिथिलामे पहिने कर्णाट वंशक राजालोकनि राज कयलनि बादमे ओइनवार वंशक। कर्णाट वंशक राजा हरसिंहदेव पर मुसलमान आक्रमणकारी चढ़ाइ कयलक। हरसिंहदेव हारि कऽ नेपाल पड़ा गेलाह। तकरा बाद मुसलमान आक्रमणकारी ओइनवार वंशक पण्डित कामेश्वर ठाकुरकेँ तिरहुतक राज्य सौंपि देलक। मुदा, कामेश्वर ठाकुर राजकाजक ओझरौटमे फँसब स्वीकार नहि कयलनि। हुनक बेटा सभमे राजा बनबाक लेल झगड़ा-मारि भेल। अन्ततः भवेश्वर ठाकुर राजा बनबामे सफल भेलाह। राजा भेलाक बाद ओ 'ठाकुर' सँ 'सिंह' भऽ गेलाह। भवेश्वर ठाकुर अर्थात् भव सिंह ओइनवार वंशक पहिल राजा भेलाह। हुनक बेटा रहथिन देव सिंह। हिनके समयमे विद्यापति पहिले-पहिल राज-दरबारसँ जुड़लाह। शिव सिंह, कीर्त्ति सिंह आदि राजकुमार विद्यापतिक संगतुरिया रहथिन। शिव सिंह जखन राजा भेलाह तखन ओ अपन बालसंगी विद्यापतिकेँ राज-पण्डित बना देलथिन।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कर्त्तव्यनिष्ठ आ शास्त्र डॉ० राजपण्डितक रूपमे विद्यापति राजासँ लऽ जनसाहित्य कऽ आमलोक धरि प्रसिद्ध भऽ गेलाह। हुनक़ प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़ैत गेलनि।

विद्यापति राजपण्डितक रूपमे काज करैत छलाह से एक तरहेँ हुनक नोकरी छलनि। जीविकाक साधन छलनि। ओहि काज करैत ओ अपन समय लिखबामे लगबैत छलाह। लीखब हुनक प्रिय, काज रहनि। विद्यापति देखलनि जे मुसलमानी आक्रमणक कारणे मिथिलाक राजनीतिक स्थिति डँवाडोल भऽ गेल अछि। सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न भऽ गेल अछि। आमलोक कतऽ जाइ की करी से निर्णय नहि कऽ पाबि रहल अछि। तेँ ओ तत्कालीन स्थितिक निवारणक दिशामे अग्रसर भेलाह। पोथी लिखलनि। ओ तीन भाषामे पोथी लिखलनि- संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली। संस्कृतमे हुनक प्रमुख कृति अछि-पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, विभागसार आदि। अवहट्ठमे कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताका नामक दूटा पुस्तक अछि। ई सभ पोथी तत्कालीन स्थितिक दस्तावेज थिक। पुरुष-परीक्षामे छोट-छोट कथाक माध्यमसँ किशोर वयक शिक्षार्थीकेँ जीवन आ जगतसँ परिचित कराओल गेल अछि। एहिमे संदेशं अछि। प्रेरणा अछि।

मुदा, विद्यापति आइ जानल जाइत छथि मैथिली भाषामे लिखित गीतक कारणे। विद्यापति मैथिलीमे लिखबाक निर्णय कयलनि से बड़ पैघ बात भेल। कहि चुकल छी जे हुनका समयमे मिथिलाक समाज अस्तव्यस्त भऽ गेल छल। लोकमे एकता नहि छलैक। भेद-भाव बढ़ि रहल छलैक। विद्यापति एहि स्थितिकेँ देखलनि, गमलनि। आ, तेँ मैथिलीमे लिखब जरूरी बुझलनि। भाषा सीमेन्ट थिक। ओ जोड़ैत अछि। अपन लोकक लग अनैत अछि। आत्मीयताक भाव बढ़बैत अछि। विद्यापति लोकक घरक भाषा, परिवार आ समाजक व्यावहारिक भाषाक महत्व जनैत छलाह। तेँ ओ मैथिलीमे तँ लिखबे कयलनि, जे लिखलनि से गीते छल। मैथिलीमे केवल गीत लिखलनि। जे लिखिपढ़ि नहि सकैत रहय हुनक गीत गबैत रहैत छल। हुनक गीतकेँ मोटामोटी तीन भागमे बाँटि सकैत छी-राधा-कृष्णसँ सम्बन्धित गीत, गौरी-महादेव विषयक गीत आ सामान्य

व्यवहारक गीत। राधाकृष्ण विषयक गीत प्रेम-गीत थिक। नारी आ पुरुषक प्रेम-गीत। प्रेम मनुष्यक स्वभावमे अछि। मिथिलामे जखन सामाजिक अराजकता रहय, भाइ-भाइमे कलह आ मारि-पीट होइत रहय तखन प्रेमक गीत गाबि स्नेह आ अनुरागक वातावरण बनायब आवश्यक छल। समयक माँग छल। विद्यापति प्रेमक गीत गओलनि। प्रेमक तागमे बन्हबाक प्रयास कयलनि। शिव-पार्वतीक गीत दू प्रकारक अछि-महेशबानी आ नचारी। महेशबानीमे गौरी आ महादेवक दाम्पत्य-जीवनक प्रसंग सभ अछि। नचारी एक प्रकारक भक्ति-गीत अछि-कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ। एहि दुनू प्रकारक गीतक अतिरिक्त अछि-व्यवहारगीत। मिथिलाक सामाजिक रीति-रेवाज, पावनि-तिहारक अवसर पर गयबाक लेल जे किछु गीत विद्यापति लिखलनि से एहि कोटिक गीत थिक। छठिहार, बिआह, पूजा-पाठ, धर्म-कर्म आदि काजमे स्त्रीगण सभ यैह गीत गबैत छथि।

स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक रचनाक लोकप्रियताक कारण हुनक सामाजिक चेतना अछि। ओ जागरणक प्रतीक छथि। मंत्रदाता गुरु छथि। भाषा आ संस्कृतिक प्रति आदरभाव रखबाक गुरु-मंत्र हुनक रचनासँ भेटैत अछि। आइ ओ नहि छथि, हुनक मृत्यु कतेक वर्ष पहिने भऽ चुकल अछि, मुदा हुनक रचना आइयो ओहिना महत्वपूर्ण अछि। हुनक प्रासंगिकता आइयो यथावत् अछि।

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) विद्यापतिक जन्म कतऽ भेल छलनि ?

(क) बिस्फी (ख) सौराठ

(ग) अन्धरा ठाढ़ी (घ) बड़गाम

(ii) विद्यापतिक संगतुरिया रहथिन –

(क) भव सिंह (ख) शिव सिंह

(ग) कीर्त्ति सिंह (घ) ख आ ग दुनूक

(iii) अवहट्ठमे हिनक दूटा पुस्तक अछि –

(क) पुरुष-परीक्षा (ख) कीर्त्तिलता

(ग) कीर्त्तिपताका (घ) ख आ ग दुनू।

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक आधार पर विद्यापतिक साहित्यिक परिचय दिअ।

(ii) विद्यापति लोक चेतनाक कवि छलाह। वर्णन करु।

(iii) विद्यापतिक रचनासँ परिचित कराउ।

(iv) विद्यापतिक भक्ति गीतक वर्णन करु।

(v) ओ कोना लोकप्रिय भेलाह।

चन्दा झा

चन्दा झा मैथिलीक आधुनिक युगक रचनाकार छथि। मैथिली साहित्यक आधुनिक काल हिनके रचनासँ शुरू होइत अछि। ई युग-प्रवर्तक रचनाकार छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक पिण्डारुच गाम मे 20 जनवरी, 1831 ई० कऽ भेलनि। बादमे ई मधुबनी जिलाक ठाढ़ी गाममे बसि गेलाह। हिनक शिक्षा-दीक्षा भेलनि मातृकमे-सहरसा जिलाक बड़गाममे। ओतहि ई संस्कृत व्याकरण आ साहित्य पढ़लनि। गन्धवारि आ नरहन ड्योढ़ीमे पण्डित-शिक्षकक रूपमे काज कयलाक बाद दरभंगा राज-दरबारमे आबि गेलाह। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह आ रामेश्वर सिंहक समयमे ई ओहिठामक सभा-पण्डित छलाह। विद्वानक रूपमे हिनक आदर छलनि। 14 दिसम्बर, 1907 कऽ हिनक निधन भेलनि।

चन्दा झा बहुआयामी व्यक्तित्वक लोक छलाह। मैथिली भाषा आ साहित्यक विकासक लेल ई कतेक प्रकारक काज कयलनि। पहिल काज छल मैथिलीक प्राचीन साहित्यक खोज करब। मिथिलाक गामे-गाम घूमि कऽ ओ जे अनुसन्धान कयलनि ताहिमे प्रमुख अछि विद्यापतिक गीत। बंगाली विद्वान शारदा चरण मित्र तथा विमान बिहारी मजुमदारक संग विद्यापति गीतक खोज तऽ करबे कयलनि, विद्यापतिक हाथक लिखल 'भागवत' सेहो उपलब्ध कयलनि। यैह कृति देखि कऽ बंगाली सभ मानि गेलाह, जे विद्यापति मैथिल छलाह। विद्यापतिक 'लिखनावली' एवं 'कीर्त्तिलता' नामक पोथी तकबाक श्रेय चन्दा झाकेँ छनि। गोविन्द दासक गीतक जे संग्रह चन्दा झा कयलनि से बादमे 'शृंगारभजन' नाम सँ छपल। एहि प्रकारक अनुसन्धान-कार्यक अतिरिक्त चन्दा झा अनेक मौलिक पोथीक रचना सेहो कयने छथि। ताहिमे मुख्य अछि 'मिथिलाभाषा रामायणक लेखन तथा विद्यापति लिखित 'पुरुष-परीक्षा' क अनुवाद। मैथिलीमे रामकथा पर महाकाव्य सभसँ पहिने चन्दे झा लिखलनि। सीता आ रामक जीवन-रचित केँ विषय बनायब, हुनका सभक महत्वक प्रतिपादन करब सम्पूर्ण भारतक साहित्यकारक

लेल आकर्षणक वस्तु छल। मैथिलीमे एकर श्रीगणेश चन्दा झा कयलनि। साहित्यमे एकटा बड़ पैघ अभावक पूर्त्ति भेल। एतबे नहि, चन्दा झा तेहन सरल, सरस आ सुन्दर भाषामे राम-कथा लिखलनि जे ओ मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय पोथी बनि गेल। तहिना पुरुष-परीक्षाक अनुवादसँ मैथिलीमे कथा-लेखनक मार्ग प्रशस्त भेल। ई दुनू कृति चन्दा झाक कालजयी अवदान अछि।

कहल जा चुकल अछि जे चन्दा झा मैथिलीक युग-प्रवर्तक कवि छथि। एहि मान्यताक सत्यापन हिनक पूर्वोक्त कार्यकलाप एवं साहित्य-रचनासँ तँ होइतहिं अछि हिनक मुक्तक कवितासँ होइत अछि। हिनक मुक्तक कविताक दूटा संग्रह उल्लेखनीय अछि-चन्द्रपद्यावली तथा चन्द्र रचनावली। दुनू पोथी हिनक मृत्युक बादक संकलन थिक। एहिमे भक्ति-गीतसँ देश-दशा विषयक गीत धरि संगृहीत अछि। जीवन आ जगतक प्रति चन्दा झाक दृष्टिकोण, वैचारिकता तथा भावाकुलता हिनक मुक्तक कवितामे मुखर भेल अछि। कहल जाइत अछि जे चन्दा झा अपन समयक आँखि आ मुँह दुनू छलाह। ओहि कालक सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक स्थितिकेँ चन्दा झा मनोयोगपूर्वक देखलनि। जमीन्दार आ ब्रिटिश शासनकीय जाँतक दूटा पट्टा छल जाहिमे आमलोक पिसाइत रहय। चन्दा झा अपन अनेक पदमे एहि स्थितिक वर्णन कयलनि अछि। ओहिमे कविक जे चिन्ता व्यक्त भेल अछि, ओहिसँ मुक्तिक जे व्यग्रता आ छटपटाहटि देखार भेल अछि से हिनक लोक-प्रेम, विकास-कामना तथा मनुक्खक हेम-क्षेमक लेल सक्रियताक साक्षी अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न –**

(i) चन्दा झाक जन्म भेलनि –

(क) 1831 ई०मे (ख) 1931 ई०मे

(ग) 1881 ई०मे (घ) 1891 ई०मे

(ii) हिनक निधन भेलनि –

(क) 2007 ई०मे (ख) 1907 ई०मे

(ग)1901 ई०मे (घ) 1891 ई०मे

(iii) हिनक प्रमुख रचना अछि –

(क) मिथिलाभाषा रामायण (ख) रचनावली

(ग) वचनावली (घ) गीतावली ।

2. **दीर्घोत्तरीय प्रश्न –**

(i) चन्दा झा पर एक निबन्ध लिखू ।

(ii) पठित पाठक आधार पर चन्दा झाक बहुआयामी व्यक्तित्वक वर्णन करू।

(iii) मैथिली साहित्यमे चन्दा झाक योगदानक उल्लेख करू ।

(iv) चन्दा झा युग प्रवर्त्तक कवि छथि। कोना ?

(v) प्राचीन मैथिली साहित्यक विकासमे हिनक अनुसंधान नव दिशा देलक। स्पष्ट करू ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

सुभद्र झा

सुभद्र झाक जन्म 9 जुलाई 1909 ई० कऽ मधुबनी जिलाक नागदह गाममे भेल छलनि। हिनक पिता ज्योतिर्विद कु जी झा छलाह आ माता निर ना देवी छलीह।

सुभद्र झाक अध्ययनारम्भ गामेक गुरु पं० बलदेव झा करौलथिन। हिनक बाल्यावस्थाक दोसर गुरु छलाह छेदी लाल। हिनक पिता पं० कु जी झा जखन गाम आबथि तखन हिनका अपने लग खाट पर सुताओल करथि तथा भोरे-भोर हिनका संस्कृतक श्लोक सभ रटाबथि। संस्कृतक अमरकोशक किछु पर्व, प्राय: आदि पर्व, एहिना ओछाओने पर हिनका कंठस्थ भऽ गेलनि।

गामक पाठशालाक बाद सुभद्र झा मिडिल स्कूल रहिकासँ मिडिल पास कयलनि। 1923 ई० मे ओ वाटसन स्कूल, मधुबनीमे नाम लिखओलनि आ ओतहिसँ मैट्रिक परीक्षा पास कयलनि। मैट्रिक पास कऽ विज्ञान पढ़बाक लेल गामसँ ओ कलकत्ताक लेल प्रस्थान कयलनि। मुदा गामेक हिनकासँ जेठ एक विद्यार्थी अपना संग मुजफ्फरपुर पढ़बा लेल ई कहि लऽ गेलथिन जे ओतहि विज्ञानमे नामांकन करा देथिन। ओ हिनक अनभिज्ञताक लाभ उठा हिनक नाम कला संकायमे लिखा देलथिन आ चिकित्सक बनबाक अभिलाषा सर्वदाक लेल समा भऽ गेलनि। ओ जी० बी० बी० कॉलेज, मुजफ्फरपुरसँ 1930 ई० मे आइ० ए० परीक्षोतीर्ण भेलाह। उच्च शिक्षाक हेतु ओ कलकत्ता चल गेलाह। ओतय ओ स्कौटिश चर्च कॉलेजसँ बी० ए० तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत) कयलनि। 1935 ई० मे ओ कलकत्ता विश्वविद्यालय छोड़लनि। डॉ० ए० बनर्जी शास्त्रीक निर्देशनमे पटना विश्वविद्यालयसँ चारि वर्ष लेल (1936-40) मैथिली विषयक शोध करबाक हेतु हिनका रिसर्च स्कॉलरशिप भेटलनि। परन्तु मुस्किलसँ आठ अध्याय समा भेल छलनि कि फेलोशिपक अवधि समा भऽ गेलैक। तखन अपन पूर्व गुरु विश्वविख्यात भाषाविद् डॉ०

सुनीति कुमार चटर्जीक निर्देशनमे ने केवल शोध काज पूरा करबाक पूर्ण अवसर भेटलनि, पूर्ण पाण्डुलिपिक पुनरीक्षण सेहो भऽ गेलनि। 1944 ई० मे डॉ० सुभद्र झा पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलाह। संयोगवश 1946 ई० मे भाषा विज्ञानक अध्ययन करबाक हेतु पटना विश्वविद्यालयसँ दू वर्ष फ्रान्समे रहि पढ़बाक व्यवस्था भऽ गेलनि। पेरिसमे ओ भाषा विज्ञान ओ ध्वनि विज्ञानक गहन अध्ययन कयलनि। पेरिस विश्वविद्यालयसँ 'ओ डाक्टर-एस-लएतर्स' उपाधि प्रा कयलनि। हिनक डाक्टरेटक परीक्षाक रिचार्टर छलाह श्रीज्यूल ब्लओक। अन्य दू परीक्षक छलाह भारतीय दर्शनक प्राचार्य श्रीमस्सओ उर्सएल एवं श्रीपआँस। एकर अतिरिक्त ओ साहित्याचार्य आ बी० एल० क उपाधि सेहो प्रा कयने छलाह।

अपन जीविकाक आरम्भ सुभद्र झा कलकत्ताक एकटा मुनिस्पैलिटीक प्राइमरी स्कूलमे गुरुजीक रूपमे कयलनि। 1935 ई० मे जिला स्कूलक हेड पण्डित भेलाह। 1941 ई० मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगामे हिन्दीक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। तकरा बाद पटना कॉलेज, पटनामे प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। 9 जनवरी 1951 कऽ डॉ० सुभद्र झा राजकीय संस्कृत कॉलेज वाराणसीक सरस्वती भवन पुस्तकालयमे लाइब्रेरियनक पद पर नियुक्त कयल गेलाह। 1956 ई० मे जखन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक निर्णय भेल, तँ राजकीय संस्कृत कॉलेजक सरस्वती भवन पुस्तकालय सहित अधिग्रहण कऽ लेल गेल। डॉ० सुभद्रझाक नियुक्ति वाराणसेय-संस्कृत विश्वविद्यालयमे ग्रन्थाध्यक्षक पद पर 22 जुलाई 1958 सँ कयल गेल जतय ओ 15 अपैल 1967 धरि रहलाह। पुनः 1970 ई० सँ 1976 ई० धरि योगदा सत्संग कॉलेज, राँचीक प्रधानाचार्यक पद पर आसीन भेलाह। सबसँ अन्तमे डॉ० सुभद्र झा पटना विश्वविद्यालयक 'मिथिलेश रमेश्वर सिंह मैथिली चेयर' क रिसर्च प्रोफेसरक पदकेँ सुशोभित कयलनि।

डॉ० सुभद्र झा प्रख्यात भाषाविद् छलाह। ओ हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन सहित चौदह भाषाक जानकारे टा नहि छलाह,

ABSOL SOLUTIONS PATNA

उक्त भाषा पर आधिपत्य छलनि। उक्त भाषामे हिनक कतेको मौलिक, अनूदित ओ सम्पादित ग्रंथ प्रकाशित -अप्रकाशित छनि। हिनक पाण्डित्यक परिचय भेटैत अछि 'दि फॉरमेशन ऑफ दि मैथिली लैग्वेज' मे जे हिनका भाषाशास्त्रीक रूपमे विश्वस्तर पर प्रसिद्धि दिओलकनि। ई पोथी मैथिलीक भाषा-तात्विक अध्ययनक दृष्टिसँ एकमात्र पोथी अछि जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे निर्विवाद रूपसँ प्रतिस्थापित करैत अछि। हिनक दोसर प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि 'स्टडीज इन दि पिप्पलाद संहिता ऑफ अथर्ववेद'। अंग्रेजीमे लिखल विद्यापति विषयक हिनक प्रमुख पोथी अछि। 'सांग्स ऑफ विद्यापति'। एहि पोथीमे विद्यापतिक गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद अछि। संगहि वृहत भूमिकामे हिनक विद्वताक झलकि भेटैत अछि। ई पोथी लिखि डाक्टर साहेब मैथिली साहित्यक संग-संग विद्यापति विषयक अध्ययनकेँ विश्वविख्यात बना देलनि। पहिल संस्करण इंगलैंडमे छपल। भारतमे एकर संस्करण बादमे भेल। डॉ० सुभद्र झाक यूरोपीय भाषासँ अनूदित अन्य पोथी अछि- पिशेल कृत प्राकृत भाषाक व्याकरणक जर्मनसँ संस्कृतमे अनुवाद आ विंटरनीत्सक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन क्लासिकल लिटरेचरक' तीन खण्ड तथा वसुबन्धुक अभिधर्मकोशक फ्रेंच एवं संस्कृतसँ अंग्रेजीमे अनूदित। हिनका द्वारा कयल गेल एहि अनूदित पोथीकेँ विद्वान लोकनि आदरक संग देखैत छथि। डाक्टर साहेब सम्पादन तथा सह सम्पादनो किछु पोथीक कयने छलाह जाहिमे प्रमुख अछि-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति पदावली।' खण्ड-2 क सम्पादक मण्डलक अध्यक्षओ छलाह। एहिमे विद्यापतिक गीतक पाठालोचन आ पाठ निर्धारण करबामे हिनक पैघ योगदान छनि।

डॉ० सुभद्र झा द्वारा संस्कृतमे सम्पादित पोथी छनि-सर्वदेशवृत्तान्त संग्रह अथवा अकबरनामा धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रह, विवरण पंजिका, श्रीमदभगवद्गीताया भारती-प्रवेशिका। धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रहमे कलकत्ता न्यायालय द्वारा समय-समय पर संस्कृत ओ बंगलामे देल गेल जजमेन्ट सभक संकलन-सम्पादन कयल गेल अछि।

मैथिलीमे डॉ० सुभद्र झाक पोथी अछि–प्रवास जीवन, यात्रा–प्रकरण–शतक, नातिक पत्रक उत्तर, विद्यापति–गीत–संग्रह आ मैथिली व्याकरण मीमांसा। एहिमे प्रथम दुनू पोथी यात्रा वृत्तान्त थिक। डॉ० सुभद्र झा जखन उच्च शिक्षा लेल विदेशमे रहथि तँ ओ फ्रांस, इंगलैंड, जर्मनी, इटली आदि देश घुमलाह आ अपन यात्राक वृत्तान्त एवं ओहिठामक लोककजीवनशैलीक अनुभव लिपिबद्ध कऽ 'मिथिला मिहिर' केँ पठायब शुरू कयलनि। ओ 1950 ई० मे 'प्रवास जीवन' नामसँ पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। डाक्टर साहेबक 'मैथिली व्याकरण 'मीमांसा' 1983 मे प्रकाशित भेल जे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगामे देल गेल मैथिली भाषाक व्याकरण पर दूटा व्याख्यान थिक। एहिमे मैथिली व्याकरणक स्वतंत्र ओ आदर्श रचना पद्धति पर विचार कयल गेल अछि। पत्रक शैलीमे मैथिलीमे लिखल हिनक 'नातिक पत्रक उत्तर' नामक पोथी प्रकाशित भेल। ई बेसी चर्चित एहि लेल भेल जे एहि पर 1986 ई० मे हिनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल। 'नातिक पत्रक उत्तर' लिखब प्रारम्भ तखन भेल जखन डाक्टर साहेब योगदा सत्संग कॉलेज राँचीमे प्रधानाचार्य छलाह। वास्तवमे एकर प्रारम्भ भेल हिनक ज्येष्ठ दौहित्र शंकरक लिखल एक पत्रसँ। ई पोथी पत्रक माध्यमसँ लिखल विविध–विषयक निबन्धक संग्रह थिक जाहिमे साहित्यिक समालोचना, समसामयिक घटनाक वर्णनक संग–संग धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक विषय पर विवेचन तथा व्यक्तिगत प्रसंगक उल्लेख भेटैत अछि। मैथिली साहित्यक ई अनुपम निधि थिक। एहि पोथीमे डाक्टर साहेबक पाण्डित्य सर्वत्र मुखर अछि। 'जर्नल ऑफ दि युविर्सिटी ऑफ बिहार (नवम्बर 1956 ई०) मे 'सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' नामक एकटा आलेख छपलनि जाहिमे सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणा पर भाषा वैज्ञानिक तक एवं प्रमाण देल गेल जे कबीरक जन्म स्थान आ भाषाक समालोचनाक आधार प्रदान कयलक।

बिहुला–विषहरि सम्बन्धी काव्य ओ कबीरदासक मैथिली पदावली पर शोध–कार्यक उत्कट इच्छा छलनि सुभद्र बाबूकेँ बिहुला–विषहरि पर शोध

करयवला छात्र तँ नहि भेटलनि। हम कबीरदासक मैथिली पदावली पर हुनके निर्देशनमे शोधकार्य कयलहुँ आ आब ओ प्रकाशितो भऽ चुकल अछि।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक सहयोगसँ मद्रास विश्वविद्यालयक तत्वावधानमे 27 सँ 29 मई 1972 धरि प्रथम अखिल भारतीय तिरूकुरल सेमिनार आयोजित छल जाहिमे डॉ० सुभद्र झा मैथिली आ संस्कृतक प्रतिनिधि रूपमे आमंत्रित छलाह। हिनक विद्वत्तापूर्णआलेख 'डिडैक्टीक वर्क्स इन मैथिली सिमिलरटू टिरूकरूल "(Didactic works in Maithil similar to Tirukkural)" आ संस्कृत 'डिडैक्टीक वर्क्स इन मैथिली सिमिलरटू दि टिरूकरूल' "(Sanskrit didactic works Similar to The Tirukkural)" विद्वत् समाजमे अपन स्थान पओलक।

डॉ० सुभद्र झाक कृतित्व जतेक महत्वपूर्ण अछि ताहिसँ कनेको कम उल्लेखनीय हुनक व्यक्तित्व नहि छनि। हुनक भेष-भूषा, चालि-ढालि, पहिरब-ओढ़ब, बाजब-बतिआयब-सभटा नितान्त साधारण छलनि। हुनका देखि कऽ हुनक विद्वत्ताक अनुमान करब कठिन छल। ओ एकदम साधारण मैथिल जकाँ रहैत छलाह। हुनका देश विदेश घूमल छलनि तकर दम्भ नहि छलनि। ओ सदिखन ठेठ मैथिली, गाम-घरक मैथिली, बजैत छलाह। गप्पक बीचमे हिन्दी-अंग्रेजी-संस्कृत बाजब अथवा विदेश प्रवासक उल्लेख करब-ई सभ हल्लुकपन हुनका नहि छलनि। अपन प्रभाव जमेबाक कोनो प्रयास ओ कहियो नहि कयलनि।

डॉ० सुभद्र झामे प्रबल इच्छा-शक्ति छलनि। अध्यवसाय आ अध्ययनक बल पर ओ प्राइमरी स्कूलक गुरुजीसँ कॉलेजक प्रधानाचार्य भेलाह। नागदह पाठशालासँ चलि पेरिसक सर्वोच्च शिक्षाक उपाधि प्रा कयलनि। नातिक पत्रक उत्तरमे लिखनहु छथि–''हमरो सन व्यक्ति जकरा मैट्रिक परीक्षामे तथाकथित मातृभाषा हिन्दीमे दस प्रतिशत अंक प्रा भेल; से ने केवल हिन्दीक उच्चतम कक्षाक अध्यापक तथा परीक्षक होयबाक अवसर प्रा कऽ साधन कऽ अपन

जीविकाटा नहि चलाओल, प्रत्युत समाजमे पढ़ल-लिखल व्यक्तिमे परिगणित भेल।''

डाक्टर साहेब (गाममे लोक एही नामसँ सम्बोधित करनि) वस्तुतः ज्ञान पिपासु छलाह। ज्ञानार्जनक ललक रहनि। अध्ययन हिनक व्यसन छलनि। कोनो वस्तुक आ विषयक सूक्ष्मतम ज्ञान प्रा करबाक हिनकामे अद्‌भुत उत्साह रहनि। कलम हिनक पैनी छल। पढ़बा-लिखबा काजमे कनेको आलस्य नहि। हुनक अक्खड़ आ निर्भीक स्वभाव हुनक दृढ़ता एवं संकल्प-निष्ठाकं बाह्य अभिव्यक्ति छल। हुनकामे द्वैध नहि छल। जे सोचैत छलाह से बजैत छलाह आ जे बजैत छलाह से करैत छलाह। भीतर-बाहर एकदम स्वच्छ, निर्मल।

डॉ० सुभद्र झा विद्धाने नहि, खेतिहर सेहो छलाह। जो जमि कऽ खेती करैत छलाह। सत्य तँ ई अछि जे ओ अपन परोपट्टाक उदाहरणीय प्रगतिशील किसान रहथि। नवीनतम प्रभेदक बीआ जतऽ भेटनि ततऽ सँ आनि कृषि-कार्य करथि। सीसो, आम, सागवान, बाँस आदि आधुनिक ढंगसँ लगाबथि। नवीनतम कृषि तकनीक जनबाक आ तकर उपयोग करबाक लेल ओ सदति सचेष्ट रहथि।

मानसिक श्रमसँ कनेको कम महत्व ओ शारीरिक श्रमकेँ नहि देलनि। कोनो काज अपने हाथे करबामे हुनका खुशी होइन। पैरे चलबामे ओ नामी रहथि। सात्विक भोजन आ शारीरिक कार्य हुनक स्वस्थताक मूल कारण छल। कहबाक चाही जे ओ जीवनक अन्तिम समय धरि स्वस्थ रहलाह। दीर्घायु भेलाह।

सामाजिक कार्यकलापमे रुचि राखब हुनक स्वभाव छलनि। गामक पुल वा सड़क बनय ताहि लेल ओ बी० डी० ओ० आ कलक्टरक कार्यालयमे दौड़ैत रहैत छलाह। जाहि विवाहमे काटर लेल जाइत छल ताहिमे सम्मिलित नहि होइत छलाह।

डॉ० सुभद्र झा वस्तुतः महामानव छलाह। प्रेरणा पुरुष छलाह। हुनक ताप सहबाक शक्ति आजुक लोककेँ नहि छैक। तेँ सभ हिनकासँ फराकेँ रहैत छल। मुदा जे सटैत छल, स्नेह पबैत छल सैह जनैत छल जे नारिकेरक खोपलैया ओकर

परिचय नहि होइत छैक। सुस्वादु पानि आ कोमल नारिकेर पयबाक लेल कठोर आवरणसँ साक्षात्कार आवश्यक अछि।

डॉ० सुभद्र झाक निधन 13 मई 2000 कऽ काशीमे भऽ गेलनि। आब ओ हमरा सभक बीच नहि छथि। मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ अपूरणीय क्षति भेल। हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व चिरस्मरणीय रहत आ ओ प्रेरणाक स्रोत बनल रहताह।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) डॉ० सुभद्र झाक जन्म भेल छलनि

(क) 1909 ई०मे (ख) 1901 ई०मे

(ग) 1919 ई०मे (घ) 1911 ई०मे

(ii) पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलाह

(क) 1944 ई०मे (ख) 1941 ई०मे

(ग) 1942 ई०मे (घ) 1940 ई०मे

(iii) डॉ० सुभद्रा झा कोन भाषाक जानकार छलाह

(क) मैथिली (ख) संस्कृत

(ग) फ्रेंच (घ) तीनू भाषाक

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) डॉ० सुभद्र झाक शैक्षणिक जीवन पर प्रकाश दिअ।

(ii) हिनक प्रमुख पोथीक संक्षि परिचय लिखू।

(iii) डॉक्टर साहेबक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एकटा निबन्ध लिखू।

(iv) डॉ० सुभद्र झा कोन-कोन भाषा जनैत छलाह आ कोन-कोन भाषामे रचना कयलनि ?

(v) डॉ० सुभद्र झा भाषाविद् छलाह। विवेचना करू।

(vi) डॉ० सुभद्र झा विद्वान, भाषावैज्ञानिक, साहित्यकार, खेतिहर आ पुरुषोत्तम छलाह। अहाँकेँ एहिसँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

डॉ० लक्ष्मण झा

गरिमा-महिमा मण्डित मिथिलाक अतीत आइयो मैथिलक लेल प्रेरणाक स्रोत बनल अछि। अनेकानेक त्यागी, तपस्वी ओ मनीषीक जन्म एहि भूमि पर भेल अछि जिनक कीर्त्ति-पताका विश्वमे फहरि रहल अछि। एहने महान विभूतिमे डॉ० लक्ष्मण झा छथि।

हिनक जन्म 5 सितम्बर, 1916 ई० मे दरभंगा जिलान्तर्गत रसियारी गाममे भेल छलनि। हिनक पिता कारी झा तथा माय कीर्त्ति देवी रहथिन।

डॉ० लक्ष्मण झा समस्त मिथिलांचलमे लखनजीक नामसँ जानल जाइत छथि। हिनक प्राथमिक शिक्षा गामेक स्कूलमे भेलनि। माध्यमिक आ उच्च विद्यालयक शिक्षाक लेल हिनक नामांकन मधेपुरक कोरोनेशन हाई स्कूलमे कराओल गेल। ओतय छात्रावासमे रहि लखनजी अपन अध्ययनमे लीन भऽ गेलाह। नेनहिसँ ई प्रतिभा सम्पन्न छात्र छलाह। हिनक जीवन-पद्धति अन्य छात्रसँ भिन्न छल। ताहि समय उच्च विद्यालयक संख्या बड़ कम छल। विद्यालयमे कार्यरत समस्त शिक्षक समर्पित भावसँ छात्रकेँ शिक्षा दैत छलाह। संयोगवश लखनजीक हाई स्कूलक प्रधानाध्यापक रहथिन अंग्रेजी, संस्कृत ओ मैथिलीक प्रख्यात विद्वान तथा लब्ध प्रतिष्ठ समीक्षक रमानाथ झा। हुनक शिक्षण कला ओ अनुशासन-प्रियता लोकमे चर्चाक विषय छल। विद्यालयक प्रतिभाशाली छात्रकेँ चीन्हि ओकरामे व्यक्तिगत रुचि लऽ प्रोत्साहित करब प्रधानाध्यापक रमानाथ झाक स्वभाव छल। हिनक एहि-चेष्टाक परिणामस्वरूप हिनक छात्र लोकनि अपन-अपन क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कयल। लखनजी ओहिमे एक छथि। एक दिस शिक्षक रमानाथ झाक आदर्श चरित्र, कठोर अनुशासन एवं सादगीपूर्ण जीवनक प्रभाव तँ दोसर दिस राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक आदर्श जीवन-पद्धति- लखनजी हुनके लोकनिक अनुरूप जीवन-पद्धति अपनौलनि।

1937 ई० मे लखनजी एहि विद्यालयसँ इन्ट्रेंस परीक्षा प्रथम श्रेणीमे पास कयलनि। हिनक अंग्रेजीक ज्ञानसँ रमानाथ बाबू अचंभित भऽ उठैत छलाह। लखनजी अपन प्रतिभाक कारणेँ रमानाथ बाबूक सबसँ अधिक प्रिय छात्र रहथि।

लखनजी भागलपुरक टी० एन० जे० कॉलेज, जे सम्प्रति टी० एन० बी० कॉलेजक नामसँ प्रसिद्ध अछि, सँ 1939 ई० मे प्रथम श्रेणीमे आई० ए० क परीक्षा पास कयलनि। 1941 ई० मे पटना कॉलेजसँ संस्कृत आनर्सक संग स्नातक (बी० ए०) परीक्षा प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ स्वर्णपदकसँ विभूषित भेलाह। 1941 ई० मे पटना कॉलेजमे एम० ए० मे नाम लिखौलनि, मुदा गांधीक आह्वान पर 'भारत छोड़ो' आन्दोलनमे सम्मिलित भऽ किछु दिनक बाद गिरफ्तार भऽ जहल चल गेलाह। स्वतंत्रता आन्दोलनमे ई अति सक्रिय छलाह।

जहलसँ मुक्त भेलाक बाद लखनजी बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर लंडन विश्वविद्यालयमे एम० ए० आपी-एच० डी० करबाक लेल इंगलैंड गेलाह। ओतहि लंडन विश्वविद्यालयसँ 1947 ई० मे एम० ए० आ 1949 ई० मे 'मिथिला एण्ड मगध' विषय पर पी-एच० डी० क उपाधि प्रा कयलनि। डिग्री प्रा भेलाक बाद लखनजीकेँ आक्सफोर्ड आ केम्ब्रिज दू विश्वविद्यालयसँ अध्यापन करबाक आग्रह कयल गेलनि। मुदा हिनक तँ देश सेवाक संकल्प छल। ओहि अवसरकेँ त्यागि 1949 ई० मे स्वदेश आपस भऽ गेलाह। अयलाक किछु दिनक बाद ओ पटना विश्वविद्यालयमे अध्यापन कार्य कयलनि।

1949 ई० मे लखनजीक नियुक्ति बिहार सरकारक काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटनामे उप-निदेशक पद पर भेलनि। बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर उच्च शिक्षा प्रा करबाक लेल शर्त्त छलनि जे वापस अयला पर कम सँ कम पाँच वर्ष धरि बिहार सरकारक अपन योग्यतानुसार कोनो उपयुक्त पद पर कार्य करय पड़तनि। ताहि समय ओहि संस्थानक निदेशक छलाह राष्ट्रीय स्तरक ख्याति प्रा विद्वान डॉ० ए० एस० अल्तेकर। लखनजी काज तँ शुरू कयलनि, मुदा ओ ओहि पदकेँ छोड़बाक बहाना ताकऽ लगलाह। तावत 1952 क चुनाव आबि

गेल। लखनजी सोशलिस्ट पार्टीसँ दरभंगा पूर्वी संसदीय क्षेत्रसँ उमेदवार भेलाह। एहि चुनावमे भाग लेबाक कारणेँ हिनका सरकारी पदसँ त्यागपत्र देमय पड़लनि। शर्त्त तोड़बाक कारणेँ चुनावक बाद बिहार सरकार सोलह हजार टाकाक लेल हिनका पर मामिला दायर कयलकनि। हिनका लेल ई एक समस्या ठाढ़ भऽ गेल। मुदा पं० हरिनाथ मिश्रक सदाशयताक कारणेँ ई ऋण मुक्त भऽ गेलाह। एम्हर लखन जी चुनाव हारि गेलाह। पं० हरिनाथ मिश्र हिनक योग्यता-क्षमतासँ विशेष प्रभावित छलाह। ओ ओहिसमय चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगाक प्रबन्ध समितिक अध्यक्ष छलाह। महाविद्यालयक डोनर बाबू चन्द्रधारी सिंहक रुचि पर लखनजीक नियुक्ति ओ इतिहास विभागमे व्याख्याताक रूपमे कयलनि, मुदा बादमे हिनका ई कहि हटा देल गेल जे ओ कोनो विश्वविद्यालयसँ इतिहासमे एम० ए० नहि छथि। तकर बाद 'इण्डियन नेशन' अंग्रेजीक दैनिक पत्रमे दूसँ चारि गोट कॉलम लिखय लगलाह आ एहि काज लेल हिनका दूसए टाका मासिक भेटय लगलनि। लखन जीक जीवन यापन लेल ई राशि पर्या छल। फरवरी 1963 ई० सँ मार्च 1972 ई० धरि हिनक 130 गौट लेख विभिन्न विषय पर 'इंडियन नेशन' मे प्रकाशित भेलनि। मुदा अपन स्वभावक कारणेँ हिनक ईहो काज छुटि गेलनि।

जननायक कर्पूरी ठाकुर 1977 मे मुख्यमंत्री भेलाह। ओ डॉ० लक्ष्मण झाक व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ परिचित-प्रभावित छलाह। तेँ मुख्यमंत्री भेलाक बाद लक्ष्मण झाक खोज कयलनि। लक्ष्मण झा ल० ना० मि० विश्वविद्यालयक वाइस चान्सलर भेलाह। एहि पद पर ओ बेस यशस्वी भेलाह।

लखनजी छात्रावस्थहिसँ देशभक्त छलाह। सर्वप्रथम 12 दिसम्बर 1928 ई० केँ साइमन कमीशनक विरोधमे प्रदर्शन कार्यक्रममे भाग लेबाक कारणेँ ई पटनामे गिरफ्तार भेलाह, मुदा छोट अवस्था रहलाक कारणेँ छोड़ि देल गेलाह। दोसर बेर सविनय अवज्ञा आंदोलनमे भाग लेबाक कारणेँ 1931 ई० मे दरभंगा शहरक नाका नम्बर पाँच लग गिरफ्तार भेलाह आ जेलक सजा भेलनि। पुनः 1942 क अगस्त क्रान्ति अर्थात् 'भारत छोड़ो' आन्दोलनमे हिनक सक्रिय सह

भागिता रहल। हिनका बिहार काँग्रेसक मुख्यालय सदाकत आश्रममे काज करबाक अवसर भेटल छलनि। 10 अगस्त 1942 ई० केँ बिहार प्रदेश काँग्रेस कमिटी द्वारा हिनका सर्वसम्मतिसँ बिहार प्रदेशक आन्दोलन-संचालनक महासचिव बनाओल गेलनि। ओहि समय लखन जी पटना कॉलेजक स्नातकोत्तर कक्षाक छात्र छलाह। भारत छोड़ो आन्दोलनमे हिनक सक्रिय सहयोग प्रशंसनीय रहल। हिनक प्रयाससँ दरभंगा जिलाक बिरौल थानामे 10 अगस्तकेँ जनता राज स्थापित भेल जे 4 सितम्बर 1942 धरि चलल। 4 सितम्बर 1942 ई० केँ पुलिस हिनक गाम रसियारी पहुँचल। ई कोनो बाटेँ निकलि गेलाह। नेपालमे सोशलिस्ट पार्टीक नेता आ कार्यकत्ता द्वारा संगठित तथा संचालित 'आजाद दस्ता' मे सम्मिलित होयबाक लेल ई विदा भेलाह, मुदा बीचहिमे भगवानपुर गाममे गिरफ्तार भऽ गेलाह। हिनका भागलपुर सेन्ट्रल जेलमे राखल गेलनि आ 1944 ई० मे कारागारसँ मुक्त भेलाह।

बादमे मिथिलाक उत्थानक लेल ओ मिथिला-मंडल संस्थाक स्थापना कयलनि जकर उद्देश्य छल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक उत्थान।

लखनजीक समस्त जीवन समाजक लेल समर्पित छल। कोना मिथिलाक विकास होयत, एहि दिस अहर्निश चिन्तन मनन ओ क्रियाशील रहैत छलाह। पद ओ पाइ हिनका कहिओ आकृष्ट नहि कयलक। सतत् ई 'एकला चलो रे' क सिद्धान्त पर चलैत रहलाह।

मैथिली भाषा ओ एकर लिपि तिरहुता वा मिथिलाक्षरक विकासक लेल ई सदैब सक्रिय रहलाह। ओ मिथिलाक्षरक लेल वर्णमाला छपौलनि तथा गामे-गामे तकर वितरण करौलनि। मैथिली भाषाक प्राचीनता एवं नेना सभक मानसिक विकासमे मातृभाषाक महत्त्व की छैक, ताहि दिस लोकक ध्यान ई आकृष्ट करबाक प्रयास कयलनि। एहि भूभागक विकासक लेल मिथिला राज्यक निर्माण हुनक कल्पना छल। एहि हेतु ओ किछु पोथी सेहो प्रकाशित करौलनि जाहिमे 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक', 'मिथिला इन इंडिया', 'मिथिला ए सोवरेन रिपब्लिक', 'मिथिला विल राइज' आदि प्रमुख अछि।

ABSOLUTE PATNA

हिनक सारस्वत अवदान सदा स्मरणीय रहत। 1952 ई० मे 'मिथिला' नामक मैथिली सा ाहिक शुरू कयलनि जे 1953 ई० धरि मिथिला आ मैथिलीक सेवा कऽ सकल। एकर कारण छल लखन जीक उग्र स्वभाव आ दृढ़ विचारधारा। मुदा जतबे दिन चलल, ई पत्रिका समाज ओ मातृभाषाक उल्लेखनीय सेवा कयलक। एहि सा ाहिकमे प्रकाशित समस्त सम्पादकीय टिप्पणी आ हुनक आलेख 'विचार-चिन्तामणि' मे संकलित अछि। समस्त आलेखमे क्रान्तिकारी विचार ओ मैथिली गद्यक सुन्दर स्वरूप दृष्टिगोचर होइत अछि।

हिनक अंग्रेजीमे एगारह, मैथिलीमे चारि, हिन्दीमे एक पोथी प्रकाशित छनि। मुदा हिनक अप्रकाशित पोथीक विशाल भंडार प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि। जेना अंग्रेजीमे अट्ठाइस, संस्कृतमे सात, मैथिलीमे छओ हिन्दीमे दस अप्रकाशित पोथी छनि।

ओ परिवारक मोहमायासँ मुक्त रहलाह। तेँ विवाह नहि कयलनि। ऋषितुल्य जीवन-यापन कयलनि। अपन सिद्धान्त पर सदा अडिग रहनिहार छलाह। लखनजीक आदर्श छलथिन महात्मा गाँधी; हुनक चिंतन ओ जीवन।

जीवन पद्धतिक लेल हिनक प्रेरक गाँधी छलथिन। क्षण-क्षणक उपयोग ई करैत रहलाह। अपन आदर्श चरित्र ओ अलौकिक प्रतिभाक कारणेँ ओ युवावस्थेसँ चर्चित आ अर्चित भेलाह। 23 जनवरी 2000 ई० केँ अपन गाम रसियारीमे चौरासी वर्षक अवस्थामे लखनजीक निधन भऽ गेल।

देशभक्त, राष्ट्रभाषाक प्रति अपार श्रद्धा, मातृभाषाक प्रति अनन्य अनुराग, मिथिला ओ मैथिलीक उत्थानक लेल सतत जागरूक रहनिहार , सफल पत्रकार, उत्कृष्ट कोटिक गद्यकार आ सबसँ बेसी सैद्धान्तिक डॉ० लक्ष्मण झाक आदर्श चरित्र आजुक पीढ़ीक लेल प्रेरणाक अक्षय स्रोत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) लक्ष्मण झा कोन नामसँ जानल जाइत छथि

(क) लखन जी (ख) रामलखन जी

(ग) लक्ष्मणजी (घ) तीनूमे सँ केओ नहि।

(ii) पी-एच० डी० क उपाधि ओ कहिया प्रा कयलनि

(क) 1949 (ख) 1947

(ग) 1937 (घ) 1950

(iii) हिनक आदर्श पुरुष छलनि

(क) लोहिया जी (ख) गांधी जी

(ग) कर्पूरी जी (घ) तीनूमे से केओ नहि।

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) पठित पाठक आधार पर लक्ष्मण झाक चरित्र-चित्रण करू।

(ii) लक्ष्मण झाक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(iii) लक्ष्मण झाक शैक्षणिक उपलब्धिक वर्णन करू।

(iv) भारतीय राजनीति ओ स्वतंत्रता आन्दोलनमे हिनक भूमिकाक चित्रण करू।

(v) लक्ष्मण झाक सारस्वत साधनाक विवेचना करू।

माँगन खवास

माँगन खबासक जन्म सहरसा जिलाक पचगछिया गामक धानुक जातिकघरमे सन् 1908 ई० मे भेल छल। हिनक माय पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक परिवारमे खवासिन छलीह। खवासिनक बेटा भेने माँगन खबासक नामसँ प्रसिद्ध भेलाह। गाममे ओ सामान्य शिक्षा पौलनि।

ओ देखबामे बड़ सुन्दर छलाह ओ हुनक कण्ठमे बांसुरीक माधुर्य छल। नेनहिमे कोनो कलाल पारखी एहि सुदर्शन बालककेँ नाचऽ सिखाकऽ, नटुआ बना देलक। माँगन नाचऽगाबह लगलाह। रायबहादुरक दरबारमे गीत-संगीतक झंकार सदिखन होइत रहैत छल। रायबहादुरकेँ जखन आंगनमे माँगनक रूप ओ गुणक परिचय भेलनि तखन माँगन ओहि राजपरिवारमे रहऽ लगलाह। रायबहादुर स्वयं नीक गायक ओ पखावजी छलथि। अतः हिनसँ पुत्रवत स्थान पाबि राय बहादुरसँ गायन-वादनक प्रशिक्षण पावय लगलाह।

माँगन खवासक बढ़ैत लोकप्रियतासँ खीझि हिनक स्वर-साधनके नष्ट करबाक हेतु हिनका सिनूर खुआ देल गेलनि। मुदा स्थितिक जानकारी होइते आवश्यक उपचारक कारणे ओ बाँचि गेलाह। माँगन बड़ परिश्रमी ओ लगनशील छलाह। आधुनिक शिक्षाक अभावोमे ओ संगीतक शिक्षामे पारंगत भऽ गेलाह। ओ नीक जकाँ धूपद, धमार, दादरा, खयाल, ठुमरी, विद्यापति गान ओ लोकगीत गाबथि जाहिसँ श्रोता मंत्रमुग्ध भऽ जाथि। स्वर साधल ओ भास सम्हारल होइत छल।

माँगन खवासक ई ठुमरी बेस लोकप्रिय छल-'बाजूवन्द खुलि-खुलि जाय'। विद्यापति गानमे प्रसिद्ध छल-'सुतल छलंहुँ भिनसरवा रे, गरबा मोतिहार।' आर लोकगीत-गायनमे-'हमरा के लागलि नजरिया हो पिया, सास ननद मोरा जनमी वएरिया मोसे भरावे गगरीया हो पिया....।' ओना अपना मने ओ वेसी भजन गावथि। मुदा फरमाइशी गीत सेहो नीक जकाँ गावथि। संगीत कलाक कोनो

आयोजन प्रदर्शन हो, हिनक गायन, वाद्यवादन, भाव भंगिमा आदिसँ श्रोता मंत्रमुग्ध भऽ जाइत छल। ओ अपना युगक अप्रतिम कलाकार छलाह।

माँगन छोट कद काठीक छलाह मुदा गठल देह ओ अत्यंत गौर वर्णक। महफिलमे चूड़ीदार पाजामा, जरीदार किमखाव शेरवानी ओ रेसमी पगड़ी पहिर कऽ ओ बैसथि एवं तानपुरा पर गाबथि। मैथिल रीतिए ओ टीक राखथि एवं माथपर सिनूरक ठोप सेहो करथि। ओ पान अवश्य खाथि। एहितरहेँ ओ दरवारी शिष्टतासँ बन्हाओल चरित्रवान, मितभाषी ओ अनुशासित छलाह।

माँगन खवासक जीवन अधिकांश समय रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंहक दरवारमे वीतल। रायबहादुर स्वयं उच्च कोटिक संगीतज्ञ छलाह। संगीत सम्मेलन ओ सभामे रायबहादुर निश्चित रूपसँ गेल करथि आर माँगन सेहो संग रहथिन। एहि तरहेँ जयपुर, जोधपुर, वीकानेर, ग्वालियर, वनारस, पटना, लखनऊ, कलकत्ता, काठमाण्डू आदिक संगीत सम्मेलन सभमे माँगन खवास अपन संगीत साधनासँ मिथिलाक मान बढ़ौलनि। हिनक अपन युगक प्रख्यात संगीतज्ञ सभसँ निकटता भेलनि, जाहिमे शीर्षस्थ छथि पं० ओंकार नाथ ठाकुर, करीमखाँ, उस्ताद फैयाज खाँ, नारायणराव, व्यास, पटवर्धन, ब्रह्मानंद गोस्वामी, बड़े अली गुलमखां आदि। पं० ओंकार नाथ ठाकुरक ओ बेस प्रिय छलाह।

एक बेर कलकत्ता संगीत सम्मेलनमे देशक प्रसिद्ध गबैयाक सूचीमे पं० ठाकुर माँगन खवासक नाम नहि देखलनि तँ ओ मंचसँ उतरि माँगनसँ भेट कऽ गयवाक आग्रह कयलनि। माँगन बाजलाह-पंडितजी, हम तँ सुनऽ आयल छी, गाबय नहि। पंडितजी माँगनक नाम सूचीमे जोड़ि तीन बजे रातितक, जागि कऽ हुनक गायन सुनलनि। सम्मेलनमे माँगनक 'परज वसंत' के सुनि श्रोता लोकनि मंत्र मुग्ध भऽ गेलाह। भोरे बाजा-गाजाक संग पम्पलेट बांटि कलकत्तामे माँगन खवासक तीन दिनक स्पेशल प्रोग्राम राखल गेल। एहिसँ हुनक लोकप्रियता बढ़लनि।

तहिना लखनऊमे आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनमे रायबहादुर लक्ष्मीनारायणसिंह गायक सूचीमे माँगनक नाम नहि देखि तामसे आगि भऽ गेलाह। मारि-पीटक स्थिति बनि गेलैक। रायबहादुर एकटा नोटिस शहरमे बँटबौलनि। जे हमर गवैयाकेँ गायनमे हरा देत, हुनका हम पुरस्कार देवनि। जखन उस्ताद फैयाजखांकेँ ई सभ बात मालूम भेलनि तँ ओहो माँगनक पक्षमे ठाढ़ भऽ गेलाह। माँगन चोटीक कलाकार छथि। गायन प्रतियोगितामे आउ। हमहुँ कहैत छी जे माँगनकेँ हरौनिहारकेँ हमहूँ पुरस्कृत करबनि। तखन लोक शांत भेल। लखनऊक संगीत सम्मेलनमे माँगनक संगीतक जादू पसरि गेल आर ओ चोटीक गायकमे प्रमाणित भेलाह। बादमे मिर्जापुरक संगीत सम्मेलन (1932 ई०) मे हिनका स्वर्णपदकसँ सम्मानित कयल गेल।

पचगछिया दरबारमे माँगन लगभग बीसवर्ष रहलाह। वादमे ओ पटनामे गयाक जमींदार अलखनारायण सिंहक शारदा संगीतालयमे 1931 सँ 1933 धरि रहि ओहिठामसँ रायगढ़क नवावक ओहिठाम गेलाह। ओहिठामसँ ओ दरभंगा महाराजक दरबारमे कुमार साहेब विश्वेश्वरसिंहसँ निकटता बढ़लनि। कुमार साहब स्वयं साज बजावथि ओ माँगन गाबथि। कालान्तरमे माँगन खवास बनैलीक कुमार श्यामानंद सिंहक सानिध्यमे अयलाह। मृत्युसँ पहिने ओ कुमार श्यामानंद सिंहक ओहिठाम बनैलीमे छलाह।

हुनक मृत्यु मात्र पैंतीस वर्षक अवस्थामे 1943 ई० मे भऽ गेलनि। बुझाइत छल जे कोनो अभिश गंधर्व अपन काज पूराकऽ गंधर्व लोक घुरि गेलाह मुदा ओ जतवे दिन जीलनि समस्त भारतक संगीत जगतमे मिथिलाक कीर्तिध्वज बनल रहलाह।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जन्म भेल छलनि

(क) 1908 मे (ख) 1918 मे

(ग) 1928 मे (घ) 1938 मे

(ii) माँगन खबास लोकप्रिय भेलाह

(क) संगीतमे (ख) नृत्यमे

(ग) चित्रकलामे (घ) बासुरी बादनमे

(iii) कोन प्रख्यात संगीतज्ञक ओ सबसे वेशी प्रिय छलाह

(क) पं० ओंकार नाथ ठाकुर (ख) करीम खाँ

(ग) नारायण राव (घ) व्यास ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) माँगन खबासक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) माँगन खबासक संगीत-साधनाक वर्णन करू।

(iii) माँगन खबास कोन-कोन राजदरबारसँ सम्बन्ध रहलाह। उल्लेख करू।

(iv) कोन-कोन प्रसिद्ध संगीत सम्मेलनमे ओ भाग लेलनि आ सम्मानित भेलाह। वर्णन करू।

(v) माँगन खबास संगीत साधक छलाह। विवेचना करू।

गोदावरी दत्त

मिथिलाक महान चित्रकर्मी श्रीमती गोदावरीदत्तक जन्म 6 नवम्बर 1930 ई० मे दरभंगा जिलाक बहादुरपुर गाममे भेल छलनि। हुनक पिता रास बिहारी दासक छत्रछाया मात्र पाँच वर्ष धरि भेटलनि, मुदा माए श्रीमती सुभद्रादेवी अपन समयक चर्चित कला साधिका छलीह। पिता विहीन गोदावरीक शिक्षा प्राइवेटसँ मैट्रिक धरि छलनि। मिथिला लोकचित्रकलाक प्रेरणा माइये छलथिन, मुदा प्रोत्साहन भेटलनि उड़ीसावासी निदेशक हरिप्रसाद मिश्रसँ।

हिनक विवाह 1947 ई० मे राँटी (मधुबनी) क उपेन्द्रदत्तसँ भेलनि। हिनक वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहि सकल। एकटा पुत्र मात्र आधार छनि। अतः ओ सोहागिन रहितहुँ परित्यक्ता बनि गेलीह। ओ कहैत छलीह–हमर अभाग हुनक नहि दोष। ओ मिथिला लोकचित्रकलाक मुख्य पहचान बनि गेलीह।

मिथिला लोकचित्रकला पर मुख्यतः महिले लोकनिक एकाधिपत्य अछि। ओ एहि क्षेत्रक कलाविभूति पद्मश्री गंगादेवी, सीतादेवी, जगदम्बादेवी, ओ महासुन्दरीदेवीसँ विशेष प्रभावित छथि। एहि पारम्परिक लोकचित्रकलाक शिक्षण–प्रशिक्षणक कोनो औपचारीक व्यवस्था नहि छैक। एहिठामक स्त्री लोकनिकेँ चित्रकलाक ज्ञान पारिवारिक अथवा कौटुम्बिक परिवेशेसँ भेटैत छनि। मुदा गोदावरीदत्त प्रतिवर्ष दसटा शिष्याकेँ प्रशिक्षण दैत आबि रहल छथि। हिनक छोट बहिन शशिकला एकटा चर्चित चित्रकर्मी बनि गेल छथि, जे हुनक शिष्या सेहो छलथिन।

गोदावरीदत्तकेँ मिथिला लोकचित्रकलामे उल्लेखनीय योगदानक हेतु सर्वप्रथम 1973 ई० मे राज्य सम्मान ओ राष्ट्रपतिक हाथेँ श्रेष्ठ ओ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार 14 नवम्बर 1980 केँ देल गेल छलनि। पश्चात् हिनक कला साधनामे निरन्तर विकासकेँ देखैत 1975 ई० मे चेतना समिति पटना द्वारा ताम्रपत्र, 1977 मे

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

टी० ए० पाई द्वारा प्रशस्तिपत्र, 1980 मे प्रख्यात चित्रकार उपेन्द्र महारथी एवं 1983 मे मधुबनीक जिलाधीश द्वारा प्रशंसापत्र सेहो देल गेलनि। आ 1980 सँ ब्रह्मानंद कला महाविद्यालय, दरभंगामे व्याख्याता पद पर काज करैत रहलीह। एहि तरहेँ मिथिला लोकचित्रकलाकेँ ओ नव दिशा ओ दृष्टि देवामे समर्थ भेलीह।

ओ देश-विदेशमे लोकचित्रकला विषयक शिक्षण-प्रशिक्षणक काज सेहो कयलनि। 1985 मे तीन स ाहक लेल जर्मनीमे कला प्रदर्शन कयने छलीह। सभटा भारत सरकार द्वारा प्रतिनियोजित छल। गोदावरीदत्तकेँ मैथिली, हिन्दी एवं अंग्रेजीक ज्ञान छलनि, जाहिसँ देश-विदेश भ्रमण एवं शिक्षण-प्रशिक्षणमे कोनो विशेष कष्ट नहि भेलनि।

हिनक एकटा प्रसिद्ध लोकचित्र जापानमे संरक्षित अछि। नौ गुणे साढ़े तीन ईंचक एहि विशेष चित्रमे विवाहक समस्त विधि प्रकारक चित्रांकन कयल गेल अछि। एहि चित्रक लेल हुनका सात हजार टाका देल गेलनि। एहिसँ प्रभावित पद्मश्री गंगादेवीक चित्र 'जीवन चक्र' अछि, जाहिमे जन्मसँ मृत्यु धरिक चौबीसटा दृश्यकेँ रूपांकित कयल गेल अछि। हिनक चित्र सभक प्रदर्शनी कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, त्रिवेन्द्रम् आदि बाहर सभमे भेल छल एवं ओ बेस प्रशंसित भेलीह।

बिहारक इण्डियन नेशन, आर्यावर्त, मिथिला मिहिर, आज आदि एवं स्टेटसमैन, पेट्रीओट, पोर्टफोलिया, ग्रेट ब्रिटेन आदिमे हिनक सचित्र जीवनयात्रा एवं कलायात्राक विवरण प्रकाशित अछि। एहितरहेँ गोदावरीदत्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक कलाक एकान्त साधिका छथि, हिनकासँ मिथिलाक गौरव ओ गरिमा बढ़ल अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) गोदावरी दत्तक जन्म भेल छलनि

(क) 1930 ई०मे (ख) 1940 ई०मे

(ग) 1950 ई०मे (घ) 1960 ई०मे

(ii) गोदावरी दत्तक उल्लेखनीय योगदान अछि –

(क) लोकचित्र कलामे (ख) संगीतमे

(ग) नाट्यमे (घ) नृत्यमे

(iii) राष्ट्रपति द्वारा श्रेष्ठ ओ दक्ष शिल्पीक पुरस्कार गोदावरी दत्तकेँ कहिया देल गेलनि

(क) 1980 मे (ख) 1970 मे

(ग) 1975 मे (घ) 1990 मे

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) गोदावरी दत्तक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) पठित पाठक आधार पर गोदावरी दत्तक मिथिला लोकचित्रकलामे उल्लेखनीय योगदानक वर्णन करू।

(iii) गोदावरी दत्तकेँ देल गेल पुरस्कार ओ सम्मानक उल्लेख करू।

(iv) देश विदेशमे गोदावरी दत्तक लोकचित्र कला विषयक शिक्षण-प्रशिक्षण काजक वर्णन करू।

(v) गोदावरी दत्त मिथिला लोककलाकेँ नव दिशा ओ दृष्टि देलनि। विवेचना करू।